ICSSR Sponsored

ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2024; Vol. 13 (2):149-156

वैदिक काल और गुप्त काल में समर्पित शैक्षणिक संस्थान का अध्ययन

विनीता सिंह एवं मोहम्मद वाकिफ
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालयए कोटवा–जमुनीपुर–दुबावल, प्रयागराज (उ0प्र0)

Received:28.10.2024 *Revised:12.12.2024* *Accepted:17.12.2024*

सारांशः

प्राचीन काल में वैदिक काल में, शिक्षा मुख्य रूप से गुरुकुल प्रणाली के इर्द–गिर्द केंद्रित थी, जहाँ छात्र अपने शिक्षकों (गुरुओं) के साथ आश्रमों या आश्रमों में रहते थे, जो अक्सर शांत और दूरस्थ स्थानों पर स्थित होते थे। शिक्षा व्यक्ति के समग्र विकास पर केंद्रित थी, जिसमें आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक विकास शामिल था। पाठ्यक्रम में वेद, उपनिषद और अन्य पवित्र ग्रंथों के साथ–साथ व्याकरण, गणित, खगोल विज्ञान और दर्शन जैसे विषयों का अध्ययन शामिल था। शिक्षण पद्धति मौखिक थी, जिसमें याद करने और सुनाने पर जोर दिया जाता था। इसके विपरीत, गुप्त काल, जिसे अक्सर भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है, में विश्वविद्यालयों जैसे अधिक औपचारिक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना हुई। इनमें से सबसे प्रसिद्ध नालंदा और तक्षशिला थे, जिन्होंने दुनिया भर से छात्रों को आकर्षित किया। इन संस्थानों ने चिकित्सा, खगोल विज्ञान, गणित, तर्कशास्त्र, व्याकरण और दर्शन में उन्नत अध्ययन सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला की पेशकश की। गुप्त काल ने वैज्ञानिक और साहित्यिक क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण प्रगति की, जिसमें आर्यभट्ट और कालिदास जैसे विद्वानों ने उल्लेखनीय योगदान दिया। इस समय के दौरान शिक्षा केवल धार्मिक शिक्षा तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि धर्मनिरपेक्ष और व्यावहारिक ज्ञान तक विस्तारित थी, जिससे अधिक व्यापक बौद्धिक वातावरण को बढ़ावा मिला।

मुख्य शब्दः वैदिक काल ,गुप्त काल, शैक्षणिक संस्थान

परिचय

वैदिक काल में भारतीय वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद) संसार के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। सामान्यतः वेदों को धार्मिक ग्रंथों के रूप में देखा– समझा जाता है, वेदों की रचना कब और किन विद्वानों ने की इस विषय में विद्वान भी एक मत नहीं हैं। जर्मन विद्वान मैक्समूलर सबसे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने भारत आकर इस में क्षेत्र में शोध कार्य शुरू किया। उनके अनुसार, वेदों में सबसे प्राचीन ऋग्वेद

है और इसकी रचना 1200 ई०पू० में हुई थी। लोकमान्य तिलक ने ऋग्वेद में वर्णित नक्षत्र स्थिति के आधार पर इसका रचना काल 4000 ई०पू० से 2500 ई०पू० सिद्ध किया है। इतिहासकार हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त अवशेषों के आधार पर हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को केवल 3500 वर्ष पुरानी मानते हैं। हमारे देश में संस्कृत भाषा का प्रयोग होता था। वेदों की भाषा संस्कृत इतनी समृद्ध एवं परिमार्जित है और उनकी विषय सामग्री इतनी विविध, विस्तृत एवं उच्च कोटि की है कि उस समय इनके विकास में काफी समय अवश्य लगा होगा।

उत्तर भारत में मौयों तथा कुषाणों के पतन के पश्चात् गुप्त वंश ने अपना विस्तृत साम्राज्य खड़ा किया। गुप्त वंश के शासकों ने अपनी शक्ति, राजनीतिक–विदग्धता एवं प्रभावशाली नीतियों का परिचय देते हुये देश के एक बड़े भू–भाग पर अपना एकाधिकार स्थापित किया तथा अन्य प्रदेशों को अधीन कर उनकी बढ़ती हुयी शक्तियों को भी क्षीण किया। सीमान्त राज्यों से मैत्री– सम्बन्ध स्थापित करने के साथ–साथ विदेशों से व्यापार–सम्बन्धों में भी वृद्धि की! भारतीय लिपि, भाषा, समाज–व्यवस्था, सांस्कृतिक एकता एवं ललित कलाओं के उन्नयन में भी गुप्त वंश का उत्कृष्ट योगदान रहा। गुप्तकालीन भौगोलिक पृष्ठभूमि की जानकारी एकत्र करने के लिये हमें निम्नलिखित बिन्दुओं का परिकलन करना होगा। प्राचीन भारत के शैक्षणिक संस्थानों का गुप्त काल में राष्ट्र के बौद्धिक, सांस्कृतिक और सामाजिक वातावरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। यह प्रभाव पूरे देश में महसूस किया गया।

उद्देश्य

1. वैदिक युग के संस्कृति का संरक्षण एवं विकास का अध्ययन
2. गुप्त काल में हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म सह–अस्तित्व का अध्ययन

गुप्त काल और वैदिक काल की शिक्षण पद्धति

पारंपरिक गुरु–शिष्य परंपरा, जिसे शिक्षक–शिष्य परंपरा भी कहा जाता है, प्राचीन भारत में गुप्त काल में इस्तेमाल की जाने वाली शिक्षण विधियों में गहराई से स्थापित थी। इस तरह की शिक्षा न केवल अकादमिक सीखने पर ध्यान केंद्रित करती थी, बल्कि इसने नैतिक, नैतिक और आध्यात्मिक अवधारणाओं की स्थापना पर भी जोर दिया। शिक्षण की यह विधि अत्यधिक अनुकूलित और गहराई से डूबने वाली थी। एक छात्र, जिसे शिष्य के रूप में संदर्भित किया जाता है, एक शिक्षक के साथ रहता था और उसकी सेवा करता था, जिसे गुरुकुल में गुरु के रूप में संदर्भित किया जाता था। इस व्यवस्था को गुरु–शिष्य परंपरा के रूप में जाना जाता है। गुरुकुल अक्सर शांत और अनुकूल वातावरण में स्थित होते थे, जैसे कि नदी या जंगल, जिस समय वे स्थापित होते थे। गुरु और शिष्य के बीच मौजूद रिश्ते को बहुत करीबी माना जाता था, और यह दोनों के लिए विश्वास, सम्मान और भक्ति के आधार पर स्थापित किया गया था। यह औपचारिक व्याख्यान या लिखित सामग्री के माध्यम से नहीं था कि गुरु जानकारी प्रदान करते थेय बल्कि, यह मौखिक शिक्षाओं, चर्चाओं और प्रदर्शनों के माध्यम से था कि गुरु ज्ञान प्रदान करते थे।

वैदिक काल में शिक्षण सामान्यतः मौखिक रूप से होता था और प्रायः प्रश्नोत्तर शंका समाधान, व्याख्यान और वाद–विवाद द्वारा होता था। उस समय भाषा की शिक्षा

के लिए अनुकरण विधि और कला–कौशल की शिक्षा के लिए प्रदर्शन एवं अभ्यास विधियों का प्रयोग किया जाता था। उपनिषदकारों ने शिक्षण की एक बहुत प्रभावी विधि का विकास किया था जिसे श्रवण, मनन और निदिध्यासन विधि कहते हैं। साफ जाहिर है कि उस समय उपरोक्त सब विधियों का प्रयोग कुछ अपने ढंग से होता था। अतः यहाँ इनके प्राचीन रूप को स्पष्ट करना आवश्यक है।

वैदिक कालीन मुख्य शिक्षा केन्द्र

वैदिक काल में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था परिवारों और उच्च शिक्षा की व्यवस्था गुरुकुलों में होती थी। ये गुरूकुल प्रारम्भिक वैदिक काल में तो प्रायः जन कोलाहल से दूर प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थापित होते थे परन्तु उत्तर वैदिक काल में बड़े–बड़े नगरों और तीर्थ स्थानों पर स्थापित होने लगे थे। उस काल में तीर्थ स्थान धर्म प्रचार के केन्द्र होने के साथ–साथ उच्च शिक्षा के केन्द्रों के रूप में विकसित हुए। बड़े–बड़े नगरों तक्षशिला, पाटलिपुत्र, मिथिला, धार, कन्नौज, नासिक, कर्नाटक और काँची उस समय के मुख्य शिक्षा केन्द्र थे।

नालंदा विश्वविद्यालय

नालंदा विश्वविद्यालय को गुप्त युग में शिक्षा का प्रतीक माना जा सकता है। मगध में नालंदा एक अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय था और एशिया से छात्र अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वहाँ आते थे। यह समकालीन दुनिया में अपनी तरह का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय था, जहाँ भारत और चीन, जापान, कोरिया, जावा, सुमात्रा, तिब्बत, मंगोलिया जैसे देशों से विभिन्न जातियों, पंथों और नस्लों के विद्वान उन्नत अध्ययन के लिए आते थे। शिक्षा में पद्धति की व्यापकता थी और पाठ्यक्रम उदार था। विभिन्न प्रकार के विषय पढ़ाए जाते थे। पाठ्यक्रम में भारत के विभिन्न धर्मों के दर्शन के साथ–साथ कला और विज्ञान की प्रणालियाँ शामिल थीं। राज्य ने विश्वविद्यालय के रखरखाव के लिए सौ से अधिक गाँवों का राजस्व प्रदान किया। वहाँ सौ व्याख्यान कक्ष थे जहाँ प्रतिदिन कक्षाएँ आयोजित की जाती थीं। छात्रवृत्ति का मापन इस बात से किया जाता था कि कोई छात्र कितने सूत्र संग्रह में महारत हासिल कर सकता है। नालंदा जल घड़ी द्वारा उत्तरी भारत के एक बड़े क्षेत्र में समय को नियंत्रित किया जाता था।

गुप्त काल और वैदिक काल की शिक्षण संस्थाओं की संरचना / स्वरूप

गुप्त काल में ऐसे शिक्षण संस्थान स्थापित किए गए थे, जिनकी विशेषता थी कि उनका शिक्षण तरीका सुव्यवस्थित और प्रतिष्ठित था। ये विद्यालय गुप्त शासन के परिणामस्वरूप स्थापित किए गए थे। इसी समयावधि में नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे प्रसिद्ध शैक्षणिक प्रतिष्ठान अस्तित्व में आए। भारत भर के छात्रों और शिक्षाविदों के अलावा, इन संस्थानों ने अन्य देशों के छात्रों और शिक्षाविदों को भी आकर्षित किया। अक्सर बौद्ध मठों से जुड़े, ये संस्थान शैक्षणिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में कार्य करते थे और अक्सर आध्यात्मिक प्रथाओं से जुड़े होते थे। वे जिन विषयों को पढ़ाते थे उनमें चिकित्सा, दर्शन, तर्क, व्याकरण, गणित और खगोल

विज्ञान आदि शामिल थे। उन्होंने कई अन्य विषयों को भी पढ़ाया। पाठ्यक्रम कठोर था और इसमें अक्सर पुस्तकों के गहन अध्ययन और लंबी बहस की आवश्यकता होती थी। इसके अतिरिक्त, अधिकांश शिक्षा संस्कृत में प्रदान की जाती थी।

प्राचीन भारत में वैदिक युग के दौरान, जो लगभग 1500 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व तक चला, शिक्षा संचरण का प्राथमिक तरीका मौखिक परंपराओं के माध्यम से था, और यह धार्मिक संस्कारों और समारोहों के कार्यान्वयन से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था। अधिकांश समय, शैक्षिक प्रतिष्ठान, जिन्हें गुरुकुल या आश्रम कहा जाता था, ग्रामीण इलाकों या वन क्षेत्रों में स्थित थे। इन शैक्षिक प्रतिष्ठानों का नेतृत्व एक गुरु द्वारा किया जाता था, जो शिक्षक के रूप में कार्य करता था, और उनमें विभिन्न पृष्ठभूमि से आने वाले छात्र शामिल होते थे, जिनमें कुलीनों के बेटे, पुजारी और कभी–कभी महिलाएँ भी शामिल होती थीं। वेदों का अध्ययन, जिन्हें हिंदू धर्म में सबसे पवित्र लेखन माना जाता है, इन गुरुकुलों में पाठ्यक्रम का प्राथमिक फोकस था। इन शास्त्रों को याद किया जाता था और उच्च स्तर की सटीकता के साथ दोहराया जाता था। वेदों के अलावा, छात्रों को दर्शन, खगोल विज्ञान, गणित, नैतिकता और राजनीति सहित कई अन्य क्षेत्रों में भी पढ़ाया जाता था। मौखिक शिक्षा शिक्षण की प्रमुख शैली थी, और छात्र अपने गुरु को सुनकर और जो उन्होंने सुना उसे अपने शब्दों में दोहराकर सीखते थे।

गुप्त काल के शिक्षण संस्थान का प्रभाव

भारतीय समाज में प्राचीन काल से शिक्षा का विशेष महत्व था। ज्ञान अथवा विद्या मानव को कर्म और आचरण से दिव्य कर देता है। वैदिक काल में ऐसे ज्ञानी व्यक्ति को सर्वोच्च प्रतिष्ठा थी ऋग्वेद के गायत्री मंत्र में भी ज्ञान को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि स्वाध्याय और प्रवचन से मानव सुसंस्कृत होता है विद्या के बिना मानव जीवन का व्यक्तित्व संकुचित और बोझिल हो जाता है यानि अज्ञानता अंधकार के सदृश है छांदोग्य उपनिषद् में कहा गया है, कि अक्षर को जानने और न जाननेवालों, दोनों कर्म करते हैं किन्तु विद्या की जानकारी रखने वाले व्यक्ति को विशेष सम्मान मिलता है।
गुप्त काल शिक्षा के प्रभावों को हम निम्नलिखित रूप में क्रमबद्ध कर सकते हैं–

ज्ञान का संरक्षण और प्रसारणः साहित्य, दर्शन, गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और राजनीति सहित कई क्षेत्रों में जानकारी को बनाए रखा गया और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को गुरुकुलों और विहारों के रूप में सौंप दिया गया, जो सूचना के संरक्षण और प्रसारण के लिए समर्पित शैक्षणिक संस्थान थे।

सांस्कृतिक पुनर्जागरणः गुप्त वंश के धनी व्यापारियों और सम्राटों द्वारा शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया, जिसके कारण एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ, जिसकी विशेषता साहित्य, कला और वास्तुकला का उत्कर्ष था। इस पुनर्जागरण ने सांस्कृ

तिक उत्कर्ष की अवधि की शुरुआत को चिह्नित किया।

सामाजिक सामंजस्य और मूल्यः गुरुकुल और विहार ऐसे संगठन थे जो न केवल शैक्षणिक निर्देश के केंद्र के रूप में कार्य करते थे बल्कि छात्रों के मन में नैतिक और नैतिक मूल्यों को प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। ये संस्थान पूरे भारत में पाए गए। गुरु और शिष्य के बीच का रिश्ता, जो विनम्रता, ज्ञान के प्रति सम्मान और समाज के प्रति कर्तव्य की भावना पर जोर देता था, उन छात्रों के विकास में महत्वपूर्ण था जो आगे चलकर नेता, बुद्धिजीवी और प्रशासक बने।

वैदिक कालीन शिक्षा के प्रभावों को हम निम्नलिखित रूप में क्रमबद्ध कर सकते हैं–

शिक्षा राज्य का उत्तरदायित्व नहीं– वैदिक काल में शिक्षा की व्यवस्था करना राज्य का उत्तरदायित्व नहीं था यह व्यक्तिगत नियन्त्रण में थी. उस पर गुरूओं का पूर्ण अधिकार था। परिणामतः शिक्षा का कोई सर्वमान्य स्वरूप विकसित नहीं हो सका, जन शिक्षा का संप्रत्यय विकसित नहीं हो सका और स्त्री शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं हो सकी। आज की परिस्थितियों में किसी भी देश में शिक्षा की व्यवस्था करना राज्य का उत्तरदायित्व माना जाता हैं. हमारे देश भारत में भी।

आय के अनिश्चित स्रोत एवं भिक्षाटन– वैदिक काल में गुरुकुलों को आज की भाँति राज्य से कोई निश्चित आर्थिक अनुदान नहीं मिलता था। ये राजा, महाराजा और धनी लोगों की कृपा पर निर्भर करते थे। यही कारण है कि उस काल में कुछ गुरूकुलों की स्थिति अति दयनीय थी। उस काल में सभी गुरुकुलों के छात्र समाज में भिक्षा माँगने जाते थे. यह उस समय के गुरूकुलों की आय का एक मुख्य स्रोत था। कुछ विद्वानों का मत है कि भिक्षाटन से दो लाभ होते थे एक तो गुरुकुलों की व्यवस्था चलती थी और दूसरे छात्रों में विनम्रता आती थी।

शिक्षा की अमनोवैज्ञानिक संरचना– वैदिक काल में शिक्षा केवल दो स्तरों में विभाजित थी प्राथमिक एवं उच्च उच्च शिक्षा की पाठ्यचर्या बाल एवं किशोरों के मनोविज्ञान के अनुकूल नहीं थी। आज की परिस्थितियों के लिए तो वह एकदम अनुपयुक्त है। आज तो मनोवैज्ञानिकों ने इस तथ्य को उजागर किया है कि शिशु, बाल, किशोर और युवाओं के मनोविज्ञान में बहुत अन्तर होता है। अतः शिक्षा को शिशु, बाल, किशोर और युवाओं के मनोविज्ञान के आधार पर शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा, उच्च प्राथमिक शिक्षा. माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा आदि स्तरों में विभाजित करना चाहिए और उच्च शिक्षा को भी विभिन्न वर्गों– कला, वाणिज्य, कृषि, विज्ञान, तकनीकी आदि में विभाजित करना चाहिए।

कला और वास्तुकला

गुप्त काल के बाद मंदिरों को दो वर्गों में विभाजित किया गया था जैसे– उत्तर भारतीय शैली (नगारा) और दक्षिण भारतीय शैली (द्रविड़)। उड़ीसा के प्रसिद्ध मंदिर उत्तर भारतीय शैली (नगारा) के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ये मंदिर मुख्यतः दो

भागों में हैं, छत पर वक्रीय शिखर के साथ सेला या गर्भगृह और एक द्वारमंडप या पिरामिडीय छत आवरण। भुवनेश्वर का महान लिंगराज मंदिर और कोणार्क का सूर्य मंदिर इस प्रकार का सबसे बेहतरीन उदाहरण हैं। चंदेल शासकों द्वारा निर्मित खजुराहो के मंदिर, मंदिर वास्तुकला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ममल्लापुरम में चट्टानों को काटकर बनाये गये मंदिर को रथ कहा जाता है और कांची के मंदिरों को कैलाशनाथ कहा जाता है तथा वैकुंठ पेरूमल दक्षिण भारतीय या द्रविड़ शैली का सबसे पहला उदाहरण हैं। दक्षिण भारतीय या द्रविड़ शैली का सबसे पहला उदाहरण ममल्लापुरम में चट्टानों को काटकर बनाया गया मंदिर रथ के रूप में जाना जाता है, और कांची में संरचनात्मक मंदिरों को कैलाशनाथ और वैकुंठनाथ पेरूमल के रूप में जाना जाता है। ये सभी मंदिर पल्लव द्वारा निर्मित किये गये थे। तंजौर और गंगेईकोंडाचोलपुरम में दो भव्य मंदिर चोलों द्वारा बनाये गये थे।

अनुशंसा

• भारत में वैदिक और गुप्त काल की शिक्षा ने व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक, धार्मिक और आध्यात्मिक पहलुओं के विकास पर जोर दिया। शिक्षा घरों, मंदिरों और गुरुकुलों में दी जाती थी। गुरुकुल प्रणाली वैदिक शिक्षा की एक प्रमुख विशेषता थी ।

• वैदिक शिक्षा पाठ्यक्रमः पाठ्यक्रम वेदों, संबंधित साहित्य, तर्क, कला, शिल्प और व्यावसायिक ६ तकनीकी विषयों पर केंद्रित था ।

• शिक्षण विधियाँः शिक्षण विधियों में मौखिक शिक्षण, याद रखना, ध्यान और पुनरावृत्ति द्वारा सुधार पर जोर दिया जाता था ।

• शिक्षा शुरू करने की उम्रः बच्चे चार साल की उम्र में अपनी शिक्षा शुरू करते थे ।

• गुरुकुल प्रणालीः गुरुकुल शिक्षक या आचार्य का घर था और सीखने का केंद्र था ।

• छात्रः सभी छात्रों को उनकी सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना समान माना जाता था ।

• गुरु और शिष्य के बीच संबंधः गुरु और छात्र के बीच का रिश्ता पवित्र था ।

• गुप्तकालीन शिक्षा स्वदेशी शिक्षा स्वदेशी शिक्षा घर, मंदिर, पाठशाला, टोल, चतुष्पदियों और गुरुकुलों में दी जाती थी मंदिर मंदिर शिक्षा के केंद्र थे और प्राचीन प्रणाली के ज्ञान को बढ़ावा देते थे ।

निष्कर्ष

गुप्त युग के शैक्षणिक संस्थानों का प्राचीन भारत की शिलालेख, यात्रा वृतांत और सीमाएँ महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं जो गुप्त युग के भौगोलिक संदर्भ पर अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। साथ ही, इन साक्ष्यों से यह भी स्पष्ट है कि गुप्त सम्राट अपने शासनकाल के जलवायु, व्यापार संबंधों और परिवहन प्रणाली को बनाए रखने के लिए इतने चिंतित थे कि यहाँ तक कि उल्लेखनीय और प्रसिद्ध शिक्षाविदों ने भी अपने लेखन में उन्हें संबोधित किया है। वैदिक शिक्षा प्रणाली आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली का नींव का पत्थर है। उसी के आधार पर आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ है।

सच बात तो यह है कि वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली हमारी संस्कृति पर आधारित थी और संस्कृति से हम अलग हो नहीं सकते। आज भी हमारी शिक्षा के उद्देश्य मूल रूप से वही हैं जो वैदिक काल में थे। वैदिक काल की भाँति हम आज भी समस्त ज्ञान विज्ञान, कौशल और तकनीकी को शिक्षा की पाठ्यचर्या में सम्मिलित करते हैं। आज भी हम शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं ।

संदर्भ

1. डग काउच (2009). आकर्षण का नियमः लोग अभी भी असफल क्यों हो रहे हैं? प्रेरणा की कला। 08 मई 2009. रेखा से ऊपर रहनाः एक जीवन कौशल जो व्यक्तिगत शक्ति बनाता है।ीजजचबध्ःबतमंजपवदजीवनहीजे.बवउ से लिया गया
2. निदा बेइंदिर, (2009), व्यावसायिक प्रगति की ओर निर्देशित गतिविधियों के शिक्षकों की धारणा के स्तर, शिक्षा, पतझड़ 2009 www-lifeskill-com
3. कोर्ड–नोघाबी और हसन पाशा शरीफी (2008) हाई स्कूल अवधि में छात्रों के लिए जीवन कौशल पाठ्यक्रम की तैयारी और संकलन। शैक्षिक नवाचारों की त्रैमासिक पत्रिका। संख्या 24, वसंत 2008। पृष्ठ–46–56
4. बॉटविन, जी. जे. और ग्रिफिन के.डब्ल्यू. (2004) जीवन कौशल प्रशिक्षणः अनुभवजन्य निष्कर्ष और भविष्य की दिशाएँ। प्राथमिक रोकथाम का जर्नल। अंक–25। पृ.–211–232
5. जोलिंगर, टी.डब्ल्यू., कॉमिंग्स, एस.एफ., और कैन, वी. (2003) मैरियन काउंटी, इंडियाना में मिडिल स्कूल के छात्रों के तम्बाकू उपयोग पर जीवन कौशल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का प्रभाव। आईआरजेसी इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च। खंड 1 अंक 11, नवंबर 2012, आईएसएसएन 2277 3630। पृ.120।
6. फेलिसा डेस्कियो (2002) मानक पाठ्यक्रम में जीवन कौशल जोड़ने का महत्व। http//www-lifeskill-com से लिया गया
7. जेनिफर नोएल क्लॉस (2000)हाई स्कूल कैरियर शिक्षाः जीवन नियोजन पाठ्यक्रम के बारे में छात्रों की धारणाएँ। हाई स्कूल शिक्षाः एशलैंड विश्वविद्यालय। शोध पत्रिकाः यूसीआर रिसोर्सेज, खंड 11।
8. पार्सन्स.सी (1988)। किशोरावस्था के लिए कौशलः परियोजना सामग्री का विश्लेषण, प्रशिक्षण और कार्यान्वयन। क्राइस्ट चर्च कॉलेज। मूल्यांकन इकाई, कैंटरबरी, यूके।
9. पार्वती वी, रंजीत आर पिल्लई (2015) ग्रामीण स्कूल में किशोरों पर जीवन कौशल शिक्षा का प्रभावः विश्वविद्यापीठम, कोल्लम, केरल, भारत। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च आर्टिकल। खंड 3, अंक 2, पृ.–788–794। आईएसएसएन 2320–5407
10. शैलेश शर्मा। (2व15) क्या नेतृत्व के गुण सक्षम प्रिंसिपलों का निर्धारण करते हैं। इनोवेरे जर्नल ऑफ एजुकेशन। खंड 3, अंक 1, 2015, 1–6,

आईएसएसएनः 2347–5528

11. अस्मिताबेन, चंद्रकांतभाई पटेल (2012. छात्र–शिक्षक का जीवन कौशल और शैक्षणिक चिंता। इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल, अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त बहुविषयक शोध जर्नल। खंडः प्, अंकः ग, नवंबर – 2012। आईएसएसएन संख्याः 2230–7850।
12. सुबिता जी. (2011) क्या वर्तमान शैक्षणिक प्रणाली जीवन कौशल शिक्षा प्रदान कर रही है? ीजजचध्ध्ःपदकपंद मकनबंजपवद तमअपमू.बवउ से लिया गया
13. कौटिल्य का अर्थशास्त्र, आर. शामशास्त्री द्वारा संपादित, मैसूर, 1924।
14. दीघ निकेय, टी.डब्ल्यू. राइज डेविड्स और वाई.ई. कारपेंटर द्वारा संपादित, लंदन, 1890–1911।
15. दीघ निकेय (हिंदी), राहुला सांकृत्यायन और जगदीश काश्यप द्वारा संपादित, बनारस, 1936।
16. दिव्यवेदना, ई.डी. कॉवेल और आर.ए. नील द्वारा संपादित, कैम्ब्रिज, 1886 कामन्दक्य नीतिशेर, आर.एल. मित्रा द्वारा संपादित, कलकत्ता, 1884।
17. महावस्तु, ई. सेनार्ट द्वारा संपादित, पेरिस, 1882–97।
18. एस शिरीषकुमार श्याम के गोरे (2023) प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली परिचय ःराष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020ः एक समीक्षा (पृष्ठ 35–44), ज्ञानोपासक शिक्षण मंडल कला, वाणिज्य और विज्ञान जिंतूर

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.